माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण

निरंजनकुमार सिंह

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर शिक्षा विभाग)
भारत सरकार

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

विषय-सूची

पृ. सं.

1. **विषय प्रवेश** 1–19

[भाषा का उद्‌भव, परिभाषा, प्रकृति एवं सामान्य विशेषताएँ, भाषा सीखने की प्रक्रिया, भाषा के व्यावहारिक रूप, भाषा के आधार—मानसिक, भौतिक, भाषा-अध्ययन सम्बन्धी दृष्टिकोण—भौतिक, समाजशास्त्रीय, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक]

2. **शिक्षा में विविध भाषाओं का स्थान और महत्त्व** 20–31

[शिक्षा की दृष्टि से विविध भाषाओं का महत्त्व—1. प्राचीन अथवा संस्कृति भाषा, भारत की संस्कृति भाषा-संस्कृत का महत्त्व; 2. मातृभाषा का स्थान और महत्त्व; 3. राजभाषा का महत्त्व, राजभाषा की शिक्षा की आवश्यकता; 4. विदेशी भाषा; विद्यालयीय शिक्षा में उपर्युक्त भाषाओं का सापेक्षिक महत्त्व, भाषा-शिक्षा-समस्या का मूल कारण, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा की अनिवार्य शिक्षा, भाषा के सम्बन्ध में विविध आयोगों में समितियों के सुझाव तथा समाधान, त्रिभाषा का प्रवर्तन]

3. **मातृभाषा का महत्त्व और पाठ्‌यक्रम में उसका स्थान** 32–47

[मातृभाषा और अन्य भाषा, मातृभाषा का महत्त्व—भावाभिव्यक्ति की स्वाभाविक भाषा; भावों एवं विचारों के उद्रेक का मूल उत्स; भावात्मक विकास का सर्वोत्तम साधन; सृजनात्मक शक्ति का विकास; बौद्धिक विकास, ज्ञानार्जन एवं चिन्तन; सामाजिक रचना, सामाजिक क्रिया-कलापों की दृष्टि से मातृभाषा का महत्त्व, सांस्कृतिक जीवन और मातृभाषा, जीवन के प्रति एवं मातृभूमि के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोणों का निर्माण, शिक्षा के माध्यम रूप में मातृभाषा का महत्त्व, उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहने से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक ह्रास, मातृभाषा का पाठ्‌यक्रम में स्थान]

4. **मातृभाषा शिक्षण के उद्देश्य** 48–59

[भाषा एवं साहित्य के विभिन्न पक्ष, मातृभाषा शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य—ज्ञानात्मक, कौशलनात्मक, रसात्मक एवं समीक्षात्मक, सर्जनात्मक, अभिवृत्यात्मक, प्रमुख उद्देश्य एवं तत्सम्बन्धी अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तन]

5. **भाषा-शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त एवं हिन्दी भाषा का शिक्षक** 60–73

[भाषा एक क्रिया प्रधान विषय है, भाषा सीखने की स्वाभाविक एवं स्वत: स्फूर्त शक्ति, भाषा सीखने की अध्ययनात्मक शक्ति, भाषा सीखना आदत बनाने की प्रक्रिया है, बाल्यावस्था का महत्त्व, भाषा-शिक्षण के सामान्य सिद्धांत—स्वाभाविक विधि, क्रियात्मकता एवं अभ्यास, मौखिक कार्य का महत्त्व, शुद्धता एवं शिक्षक का आदर्श, भाषा के विविध अंगों का सापेक्षिक महत्त्व, क्रमायोजन, रोचकता, वैयक्तिक विभिन्नता, बहुमुखी प्रयास, कण्ठस्थ करना, मनोवैज्ञानिक शिक्षण-सूत्रों का प्रयोग]

6. **हिन्दी उच्चारण-शिक्षण** 74-91
[उच्चारण-शिक्षण का महत्त्व, शुद्ध उच्चारण का तात्पर्य, माध्यमिक स्तर पर उच्चारण-शिक्षण की उपादेयता एवं उद्देश्य, हिन्दी ध्वनियाँ तथा उच्चारण की दृष्टि से उनका वर्गीकरण, सामान्य उच्चारण सम्बन्धी दोष तथा शिक्षण द्वारा उनका निराकरण, माध्यमिक कक्षाओं में उच्चारण-शिक्षण के अवसर एवं शिक्षण-प्रक्रिया]

7. **हिन्दी वर्तनी-शिक्षण** 92-111
[वर्तनी-शिक्षण का महत्त्व, माध्यमिक स्तर पर वर्तनी-शिक्षण के उद्देश्य, वर्तनी-सम्बन्धी अशुद्धियों के कारण—लिपि की अनभिज्ञता, उच्चारण-दोष, व्याकरणिक रूपों की अनभिज्ञता, कुछ शब्दों के सर्वमान्य रूप का अभाव, वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का वर्गीकरण एवं अभ्यास, वर्तनी-शिक्षण के अवसर एवं शिक्षण-प्रक्रिया।]

8. **हिन्दी शब्द-शिक्षण** 112-137
[शब्द की परिभाषा, शब्द का महत्त्व, बाल्यावस्था और शब्द विकास, हिन्दी शब्द-भण्डार, शब्द-रचना की दृष्टि से हिन्दी शब्द-समूह का विभाजन, माध्यमिक स्तर पर शब्द-शिक्षण के उद्देश्य, शब्द-शिक्षण के विविध अवसर एवं प्रयोग—पाठ्य-पुस्तक के शिक्षण के समय—अर्थबोध द्वारा, शब्द-निर्माण द्वारा, विशिष्ट शब्द-प्रयोगों का परिचय, संरचनात्मक शब्दों का ज्ञान, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का परिचय, शब्दों के व्याकरणिक रूपों का परिचय, विदेशी भाषाओं से आए हुए शब्दों का परिचय, मौखिक एवं लिखित रचना में शब्द-शिक्षण, विविध साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन, शब्द-शिक्षण की दृष्टि से कुछ ध्यातव्य बातें]

9. **हिन्दी वाक्य-रचना शिक्षण** 138-162
[वाक्य-रचना शिक्षण का महत्त्व, वाक्य की परिभाषा, वाक्य रचना-शिक्षण की उपेक्षा, वाक्य-शिक्षण के उद्देश्य, हिन्दी वाक्य-गठन—उद्देश्य, विधेय, अन्वय, अधिकार, पदक्रम, कर्त्ता और क्रिया का अन्वय, कर्म और क्रिया का अन्वय, संज्ञा और सर्वनाम का अन्वय, विशेष्य और विशेषण का अन्वय, पदक्रम—व्याकरणीय पदक्रम, बल के लिए विशेष पदक्रम; अध्याहार, वाक्य के प्रकार—साधारण, मिश्र, संयुक्त; वाक्य रचना सम्बन्धी दोष, वाक्य रचना-शिक्षण के अवसर एवं शिक्षण प्रक्रिया, विराम चिह्न।]

10. **मौखिक रचना-शिक्षण** 163-186
[रचना से तात्पर्य, मौखिक रचना का महत्त्व, मौखिक रचना सम्बन्धी अपेक्षित गुण एवं विशेषताएँ, मौखिक प्रकाशन के मूल आधार, मौखिक रचना-शिक्षण के उद्देश्य, मौखिक रचना-शिक्षण के विविध अवसर एवं रूप, मौखिक रचना-शिक्षण में सामान्य ध्यातव्य बातें, मौखिक रचना का संशोधन, पाठ-विकास एवं पाठ-संकेत]

11. **लिखित रचना-शिक्षण** 187–215

[परिभाषा, मौखिक रचना की अपेक्षा लिखित रचना में विशेष अपेक्षित गुण, विशेष रचना का महत्त्व, लिखित रचना शिक्षण के उद्देश्य, लिखित रचना-शिक्षण में ध्यान देने योग्य बातें, लिखित रचना के अंग, सुलेख, भाषा सम्बन्धी अभ्यास, रचना के विषय—नियमबद्ध रचना, मुक्त रचना, रचना के विविध रूप, पत्र-प्रपत्र, वर्णन, संवाद, जीवनी, आत्मकथा, व्याख्या, स्तर लेखन, विचार-विस्तार, रिपोर्ट, नोट लेना, नोट बनाना, संपादकीय पुस्तक समीक्षा, सृजनात्मक अभिव्यक्ति सम्बन्धी रचनाएँ—निबन्ध, कहानी, एकांकी, गद्यगीत, कविता, लिखित रचना को प्रभावपूर्ण बनाने के साधन, रचना-शिक्षण विधियाँ, निबन्ध रचना तथा उसकी शिक्षा, कक्षा शिक्षण प्रक्रिया, लिखित रचना का संशोधन]

12. **पठन-शिक्षण** 216–239

[पठन-शिक्षण का महत्त्व, पठन-कौशल से तात्पर्य अथवा पठन-मनोविज्ञान, पठन-शिक्षण के उद्देश्य, पठन प्रक्रिया सम्बन्धी आधारभूत तत्त्व, पठन के प्रकार, सस्वर पठन, सस्वर पठन सम्बन्धी विशेषताएँ, मौन पठन, मौन पठन का महत्त्व और उसकी उपयोगिता, मौन पठन दक्षता तथा उसके लक्षण, मौन पठन के प्रकार, मौन पठन का प्रारम्भ, मौन पठन को सोद्देश्य बनाना, मौन पठन का संचालन एवं शिक्षण विधि, पठन रुचि का विस्तार एवं पठन-सामग्री, पठन-शिक्षण एवं पाठ्यपुस्तक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर के उपयुक्त पाठ्य सामग्री—कहानियाँ, संवाद, एकांकी, नाटक, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, वर्णन, निबन्ध, कविता]

13. **गद्य साहित्य की विधाएँ और उनका शिक्षण** 240–256

(निबंध-शिक्षण)

[हिन्दी गद्य का विकास, गद्य की प्रमुख विधाएँ, निबंध की रचनागत विशेषताएँ, निबंधों का वर्गीकरण, निबंध के प्रमुख शिक्षण बिंदु एवं शिक्षण विधि]

14. **गद्य साहित्य की विधाएँ और उनका शिक्षण** 257–267

[यात्रा वृत्तांत, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण और रेखाचित्र की रचनागत विशेषताएँ और उनका शिक्षण]

15. **कहानी-शिक्षण** 268–275

[कहानी-शिक्षण का महत्त्व, आधुनिक हिन्दी कहानियों के विविध रूपों एवं शैलियों का छात्रों को परिचय, कहानी कहने में ध्यान देने योग्य बातें, कहानी-शिक्षण की क्रिया-विधि एवं पाठ-सोपान]

16. **नाटक-शिक्षण** 276–282

[नाटक की परिभाषा, नाटक-शिक्षण का महत्त्व, नाटक-शिक्षण के उद्देश्य, नाटक-शिक्षण प्रणाली, आदर्श नाट्य प्रणाली, अभिनय प्रणाली, व्याख्या प्रणाली, शिक्षण-सोपान, नाटक-शिक्षण में ध्यान देने योग्य बातें, अभिनय]

17. कविता-शिक्षण 283-298
[कविता की परिभाषा, कविता-शिक्षण का महत्त्व, कविता-शिक्षण के उद्देश्य, उपयुक्त कविताओं का चयन, शैक्षिक स्तरों की दृष्टि से कविता के प्रकार, हिन्दी कविता के सौन्दर्य तत्त्व, काव्यानुभूति के सिद्धान्त, कविता-शिक्षण विधियाँ—गीत प्रणाली, नाट्य प्रणाली, शब्दार्थ कथन प्रणाली, प्रश्नोत्तर अथवा खण्डान्वय प्रणाली, व्याख्या प्रणाली (व्यास, तुलना एवं समीक्षा प्रणाली), कविता शिक्षण-सोपान, काव्यात्मक रुचि बढ़ाने के साधन]

18. व्याकरण-शिक्षण 299-310
[व्याकरण-शिक्षण की परम्परा, व्याकरण की परिभाषा, भाषा-शिक्षण में व्याकरण-शिक्षण का स्थान, व्याकरण-शिक्षण का महत्त्व और उसकी उपयोगिता, व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य, व्याकरण-शिक्षण किस स्तर पर प्रारम्भ किया जाय, व्याकरण-शिक्षण की विधियाँ, व्यावहारिक व्याकरण, उसकी शिक्षण-विधि, शिक्षण-सोपान]

19. द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण 311-325
[मातृभाषा एवं द्वितीय भाषा, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य, अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का पाठ्यक्रम, द्वितीय भाषा शिक्षण विधि, व्याकरण एवं अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, संघटनापरक विधि, संरचनात्मक अथवा गठन पद्धति, आधुनिक भाषा विज्ञान एवं भाषा-शिक्षण, आधुनिक भाषा-विज्ञान की कतिपय मान्यताएँ—व्यवस्था, उच्चरित रूप, गठन, वाक्य इकाई है। भाषा की विकासशीलता, सामाजिक व्यवहार, द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी की कतिपय समस्याएँ एवं उनके समाधान की आवश्यकता]

20. भाषा-शिक्षण एवं शैक्षणिक उपकरण 326-333
[शैक्षणिक उपकरण तात्पर्य एवं उपयोगिता, शैक्षणिक उपकरणों के विविध रूप—श्यामपट्ट, फेल्ट बोर्ड, मौखिक या शाब्दिक उदाहरण, दृश्य-श्रव्य उदाहरण, दृश्य-श्रव्य उदाहरणों का चयन और प्रयोग, कतिपय दृश्य उदाहरण—वस्तुएँ, नमूने, चित्र, रेखाचित्र एवं डायग्राम, मानचित्र, चार्ट, पोस्टर, टाइम लाइन आदि, यांत्रिक दृश्य-श्रव्य सामग्री—चित्र दर्शक, चित्र विस्तारक, रेडियो, ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर, भाषा प्रयोगशाला, लिंग्वाफोन, टेलिविजन, चलचित्र, अभिनय, परिभ्रमण]

21. हिन्दी पाठ्यचर्या एवं उसका आलोचनात्मक अध्ययन 334-339
[पाठ्यचर्या से तात्पर्य, हिन्दी पाठ्यचर्या संगठन के सिद्धान्त, पाठ्यचर्या के आलोचनात्मक अध्ययन]

22. मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक 340-360
[पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता एवं उपयोगिता, पाठ्यपुस्तक का अनुचित प्रयोग, अन्य विषयों की अपेक्षा मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ, मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक रचना के सिद्धान्त—विभिन्न पक्ष, रचना के सोपान, विविध उत्पादन विषय-सामग्री का चयन—वैचारिक सामग्री, नवीन शैक्षिक संदर्भ, भाषिक सामग्री, साहित्यिक विधाएँ, विषय-सामग्री

की मात्रा, विषय-सामग्री का वर्गीकरण—वैचारिक-सामग्री, भाषिक-सामग्री, साहित्यिक विधाएँ, विषय-सामग्री का प्रस्तुतीकरण—विभिन्न पाठ, अभ्यास, प्रारम्भिक आवश्यक बातें, शब्द-कोष, व्याख्या, सन्दर्भ आदि; पाठ्यपुस्तक का बाह्य पक्ष]

23. **परीक्षा** 361-375
[परीक्षा का महत्त्व, परीक्षा का परम्परागत रूप और हिन्दी भाषा परीक्षण, परीक्षा सम्बन्धी नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मूल्यांकन का अर्थ और महत्त्व, मूल्यांकन की विधियाँ, उत्तम परीक्षा के गुण, भाषा परीक्षा एवं निबंधात्मक प्रश्न, लघूत्तरात्मक प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, वस्तुनिष्ट प्रश्नों के विविध रूप, भाषा में तीनों प्रकार के प्रश्नों की आवश्यकता, भाषा परीक्षा सम्बन्धी विचारणीय बातें, मौखिक परीक्षा का समावेश]

24. **आधुनिक शिक्षण प्रणालियाँ और भाषा-शिक्षण** 376-390
[भाषा-शिक्षण एवं किंडर गार्टन प्रणाली, भाषा-शिक्षण एवं माण्टेसरी प्रणाली, भाषा-शिक्षण एवं प्रोजेक्ट प्रणाली, भाषा-शिक्षण एवं डाल्टन योजना, भाषा-शिक्षण एवं खेल प्रणाली, भाषा-शिक्षण और बेसिक शिक्षा]

25. **पुस्तकालय, वाचनालय, भाषा-कक्ष** 391-398
[पुस्तकालय की आवश्यकता एवं उपयोगिता, पुस्तकालय का संगठन, पुस्तकों का चयन, भाषा एवं साहित्य अनुभाग, पुस्तक प्रयोग संबंधी आवश्यक बातें, कक्षा-पुस्तकालय, वाचनालय, हिन्दी भाषा-कक्ष]

26. **क्रियात्मक शोध तथा हिन्दी-शिक्षण** 399-407
[क्रियात्मक शोध का तात्पर्य एवं उसकी उपयोगिता, मौलिक एवं क्रियात्मक शोध में अंतर, क्रियात्मक शोध का क्षेत्र, क्रियात्मक शोध की क्रिया विधि, भाषा-शिक्षण में क्रियात्मक शोध, वर्तनी समस्या पर क्रियात्मक शोध की एक रूपरेखा]

27. **शैक्षणिक निदान एवं उपचारी शिक्षण** 408-413
[शैक्षणिक निदान एवं उपचारी शिक्षण का तात्पर्य 'क्रियात्मक शोध' और 'शैक्षणिक निदान एवं उपचारी शिक्षण' में अन्तर, शैक्षणिक निदान एवं उपचारी शिक्षण की उपयोगिता, भाषा-शिक्षण में शैक्षणिक निदान का रूप, शैक्षणिक निदान की विधि, उपचारी शिक्षण]

28. **हिन्दी-शिक्षण में इकाई-योजना** 414-436
[इकाई-योजना का अर्थ, पाठ्यचर्या और इकाई-योजना, इकाई के रूप, इकाई-रचना के सिद्धान्त, भाषा-शिक्षण में इकाई योजना की आवश्यकता एवं उपयोगिता, भाषा-शिक्षण में इकाई-गठन के आधार, इकाई पाठ-योजना : एक नमूना]

परिशिष्ट

1. पाठ-योजना—गद्य, द्रुतपाठ, कविता, कहानी, नाटक, निबंध रचना, व्याकरण 437-461
2. संदर्भ पुस्तकों की सूची 462-464

□□□